BA III yr.
6/7/20

सम्पत्ति (Property)

Q. सम्पत्ति क्या है? सम्पत्ति की उत्पत्ति के सिद्धान्तों का वर्णन करें।

DATE :

सम्पत्ति का अंग्रेजी अनुवाद (Property) शब्द की व्युत्पत्ति Latin word 'Propriatas' से हुई है जिसका अर्थ होता है अपना (one's own), नजदीक या समीप। अर्थात् जो वस्तु व्यक्ति के समीप हो या उसका अपना हो वही सम्पत्ति है। इस अर्थ में जिसपर स्वामित्व हो वह सम्पत्ति है। इसलिए सम्पत्ति का प्रधान लक्षण स्वामित्व है। स्वामित्व का अर्थ पूर्ण अधिकार से है। अधिकार उसी को माना जाता है जब सम्पत्ति के उपभोग की पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त हो अर्थात् उसे बेचने, बन्धक रखने या दूसरों को देने का अधिकार प्राप्त हो। उपभोग या उपयोग का भी अधिकार निहित है। सभी मौलिक या अमौलिक पदार्थों पर जिसका निर्माण अथवा स्वामित्व हो, वे अधिकारों का केन्द्र सम्पत्ति है।

सम्पत्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। अतः सम्पत्ति एक साधन है। सम्पत्ति पर व्यक्ति का अधिकार होता है तथा उसके अधिकारों की रक्षा के लिए समाज के द्वारा व्यवस्था होती है। कानून बनाकर सम्पत्ति के उपभोग के योग्य न रहने पर उसके लिए समाज उसके लिए अधिकार प्रदान करता है। संक्षेप में अर्जित सम्पत्ति की रक्षा हेतु सामाजिक एवं वैधानिक दोनों प्रकार के अधिकार प्राप्त होते हैं। सम्पत्ति का उपभोग कुछ-कुछ अपनत्व की भावना जाग्रत होती है तथा व्यक्ति का सम्पत्ति के साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। सम्पत्ति मनुष्य के व्यक्तित्व का अंग हो जाती है। सम्पत्ति का अर्थ है वस्तुओं के उपभोग का एक मात्र अधिकार।

~~सम्पत्ति की उत्पत्ति~~

सम्पत्ति की उत्पत्ति तथा विकास

सम्पत्ति की उत्पत्ति से संबंधित विद्वानों में काफी मतभेद है। कुछ विद्वानों के अनुसार प्राचीन समाज में वैयक्तिक सम्पत्ति का अस्तित्व नहीं था। सम्पत्ति पर सार्वजनिक अथवा सभी व्यक्तियों का अधिकार होता था। धीरे-धीरे समाज के उपयोग किया करते थे। बाद में आदिम समाज का विकास सम्पत्ति एंगेल्स, प्लेटो, हॉब्स आदि विचारकों ने किया था विकासवादियों ने तो आदिम काल से वैयक्तिक सम्पत्ति का अस्तित्व माना है।

हॉब्स ने वैयक्तिक सम्पत्ति को प्रकृति का परिणाम कहा है। उनके वैयक्तिक सम्पत्ति को प्रकृति का नियम माना है। युद्ध की अवस्था में बलवानों का आधिपत्य कायम हुआ। कालान्तर शांति व्यवस्था तथा सुरक्षा की दृष्टि से समझौता हुआ तथा कानून बने।

लॉक ने प्राचीन साम्यवाद की अवधारणा को अस्वीकार किया। उनके अनुसार श्रम सम्पत्ति का आधार है। किसी वस्तु को उपयोग में लिया जाना आवश्यक है। जिसने श्रम द्वारा आर्जित वस्तु को ही सम्पत्ति माना है जिसपर अपना आधिपत्य हो। अतः स्पष्ट होता है कि श्रम से अर्जित सम्पत्ति ही सही है।

कुछ विद्वानों ने वैयक्तिक सम्पत्ति को चोरी की वस्तु माना है जिसका समर्थन किसी ने किया है, उपरोक्त विचारों से स्पष्ट होता है आदिम काल में सम्पत्ति का कोई निश्चित रूप नहीं था। साम्यवादी काल में भी

PAGE NO :
DATE :

वैधानिक उपबन्ध सीमित एवं आरम्भ कर रखा था धीरे-धीरे गत कुछ वर्षों का विकास हुआ तथा पूंजी पर आधिपत्य कायम हुआ और उद्योग में उपयोग गार्ने लगा। उनके परिवर्तन द्वारा पूंजीवाद का जन्म हुआ और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पूंजी की आवश्यकता आ पड़ी। इन्हें पूंजीपतियों का इनपर आधिपत्य हुआ और पूंजी ही वैधानिक उपबन्धों का एवं आरम्भ का रहा।

वैधानिक उपबन्ध मूलतः मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के उत्पादन की पर गत धीरे-धीरे उद्योग पूंजी तैयार हुई तब पूंजीवाद और समाजवाद का जन्म हुआ जिसे हटाने के लिए आज समाजवादी व्यवस्था की चर्चा जोरों पर है जिसके अनुसार उपबन्ध वैधानिक नहीं कानूनी उपबन्ध समाज की होती है।

लेख आगे..